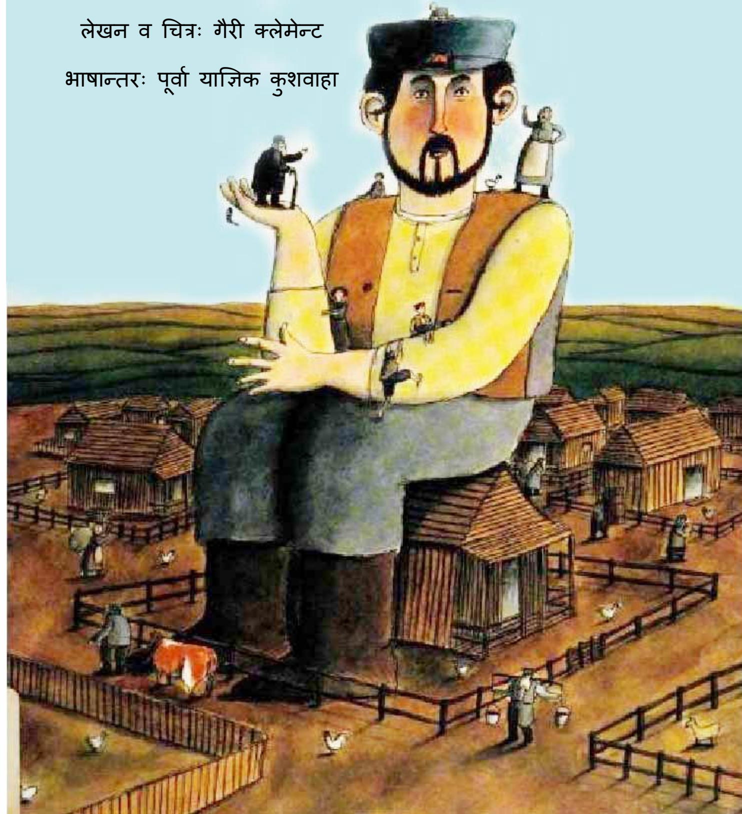
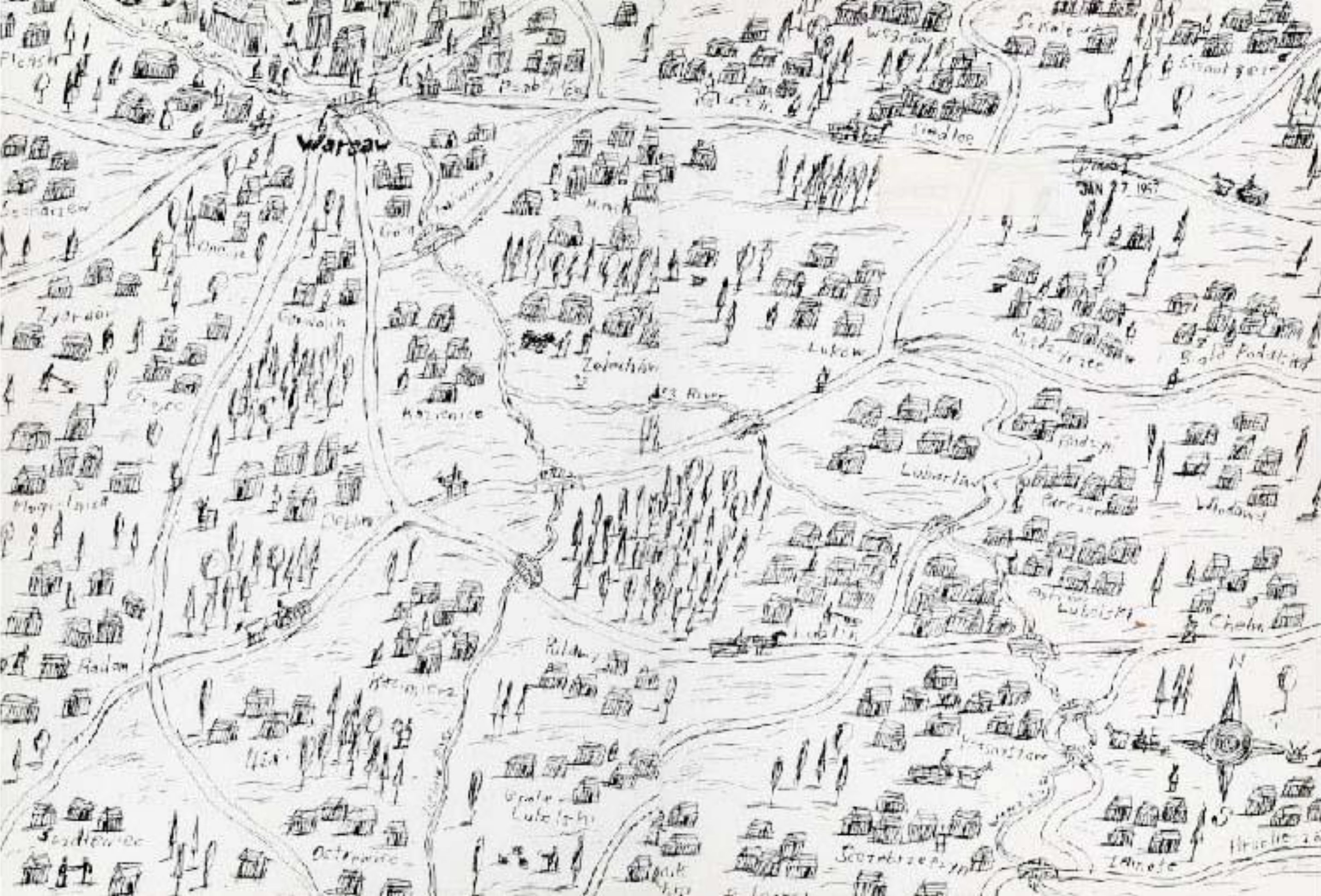
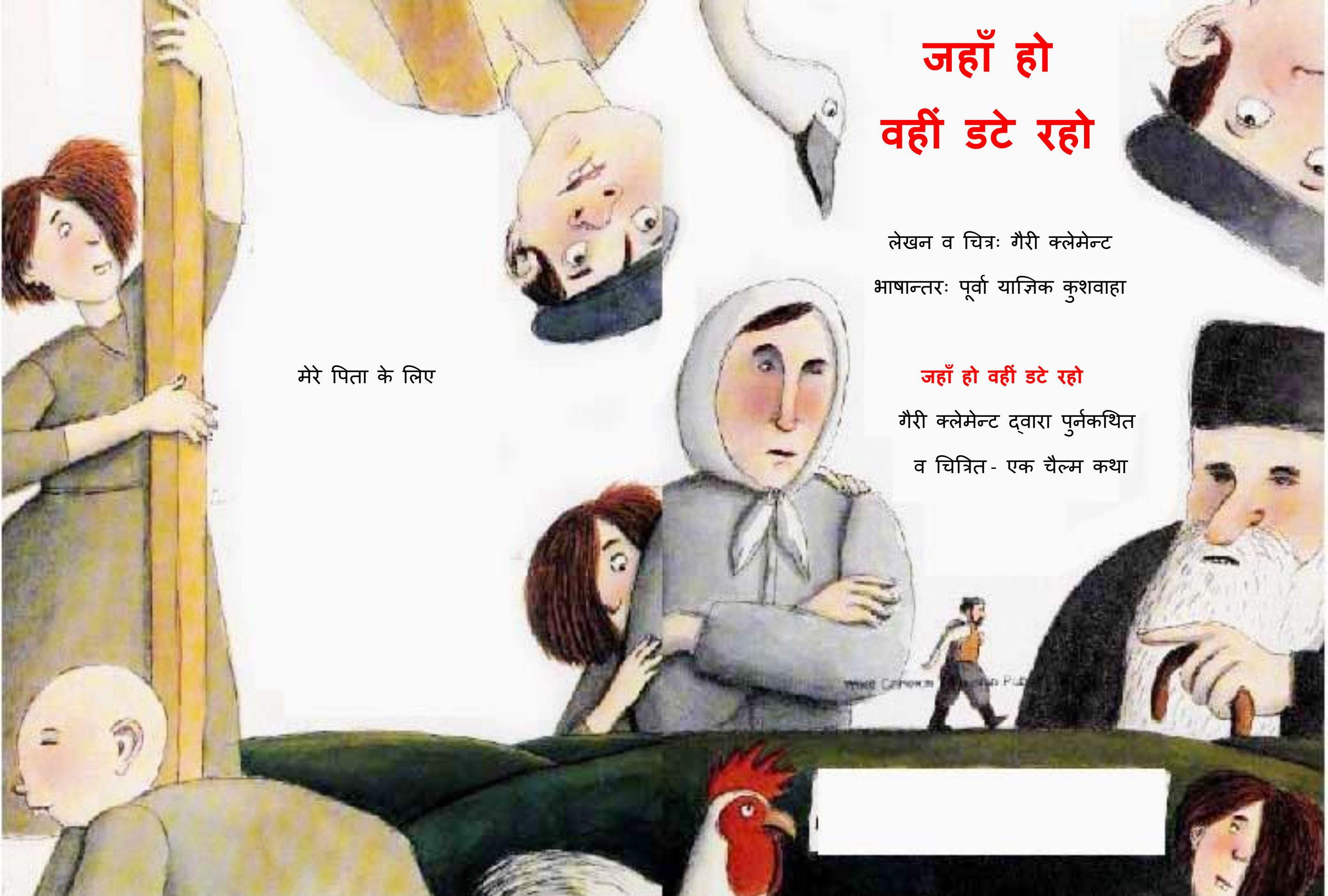
जहाँ हो वहीं डटे रहो

लेखन व चित्रः गैरी क्लेमेन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा




Warsaw
Siedlce
JAN 27 1957
Lukow
Lubartow
Chelm
Radom
N
S



मेरे पिता के लिए

जहाँ हो वहीं डटे रहो

लेखन व चित्रः गैरी क्लेमेन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जहाँ हो वहीं डटे रहो

गैरी क्लेमेन्ट द्वारा पुर्नकथित

व चित्रित - एक चैल्म कथा



चैल्म के छोटे-से गाँव में बस कुछ दर्जन खस्ताहाल घर थे, एक मुख्य सड़क थी, एक पुराना सिनेगॉग (यहूदियों का प्रार्थना घर) और एक जर्जर हाट-बाज़ार। अन्य जगहों के लोगों की ही तरह चैल्म के लोग भी मेहनतकश और ईमानदार थे।

वे खेत मज़दूर थे और फेरी लगा सामान बेचने वाले थे। वे मच्छीमार और किसान थे। वे नाई और बच्चों की देखभाल करने वाले थे। वे यह थे और वह थे।

और वे निहायत भोंदू भी थे।

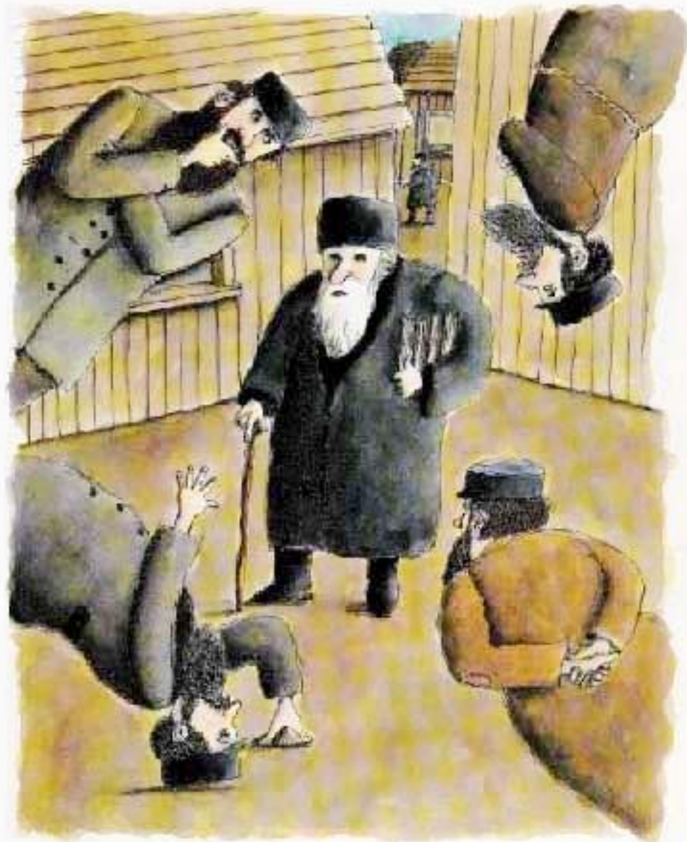
बेशक चैल्म के बाशिन्दे खुद को मूरख नहीं मानते थे। वे तो खुद को बड़ा चतुर-सुजान समझते थे - निहायत होशियार मानते थे। और गाँव वालों का यह मानना था कि सबसे बुद्धिमान चैल्मवासी था उनका रब्बी (यहूदी पादरी), दुनिया का सबसे अक्लमन्द इन्सान था। तो भला वह कितना बुद्धिमान था? एक मिसाल देखो।

एक दिन गाँव वालों की एक समूह ने रब्बी को रोका।

''रब्बी,'' एक ने पूछा। ''हमें बताएं कि कौन ज़्यादा अहम है, चाँद या सूरज?''

''बेशक चाँद,'' रब्बी ने फ़ौरन जवाब दिया। ''जब रात को अंधेरा होता है, चाँद हमें देखने में मदद करता है। और दिन में तो वैसे ही रोशनी होती है, सो सूरज की ज़रूरत भला किसे पड़ती है?''

रब्बी ने एक बार फिर गाँव के बाशिन्दों के सामने सिद्ध कर दिया कि उनके बीच कितना बड़ा ज्ञानी-ध्यानी बन्दा रहता है।



क्या तुम्हे चैल्म वासियों की मूरखता या चतुराई का एक और उदाहरण चाहिए? तो सुनो।

चैल्म में किसी समय मैन्डेल नाम का एक आदमी रहता था। वह एक अच्छा और रहमदिल पति और पिता था, पर बेहद आलसी भी था। वह पूरे दिन बैठे-बैठे सपने देखा करता था। वह यह सपना देखता कि वह इतना प्रतिभाशाली बन गया है कि पूरे ब्रह्माण्ड की समस्याओं को हल कर देता है। यह भी कि वह चिड़िया की मानिंद उड़ सकता है। पर सबसे ज़्यादा सपने वह सफ़र करने के बारे में देखा करता था।

"मैंने अपनी पूरी ज़िन्दगी चैल्म में बिताई है," एक दिन मैन्डेल ने सोचा। "अब मैं थोड़ी-बहुत दुनिया भी देखना चाहता हूँ।"

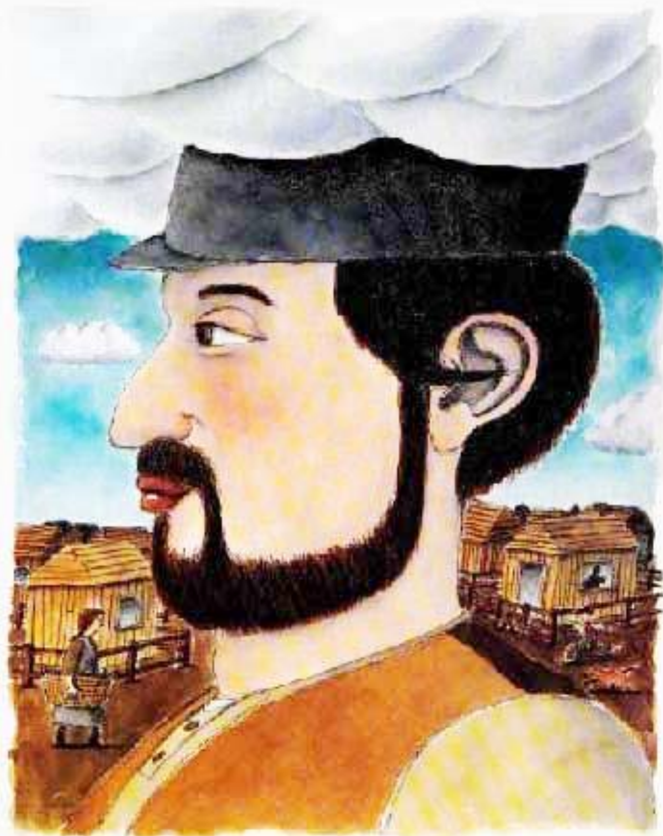
मैन्डेल की पत्नी माल्के भी मैन्डेल की ही तरह नरम दिल और मेहरबान थी। पर कभी-कभी उसे अपने निखट्टू, सपने देखने वाले वाले पति पर खीज भी आती थी।

"मैन्डेल," वह चिढ़ कर कहती, "तुम कोई काम-धंधा आख़िर कब तलाशोगे?"

"ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगा," मैन्डेल जवाब देता।

"सोचोगे भला कब?" माल्के खीज कर कहती।

"जब कोई काम मिल जाएगा," मैन्डेल शान्ति से जवाब देता।



एक दिन माल्के ने मैन्डेल से पूछा, ''अजी, आज क्या सपना देख रहे हो?''

''सफ़र करने का,'' मैन्डेल ने आहिस्ता से कहा।

''अच्छा, तो सफ़र कहाँ का करोगे, महा-मुसाफ़िर साहब?'' माल्के ने खिल्ली उड़ाते हुए पूछा।

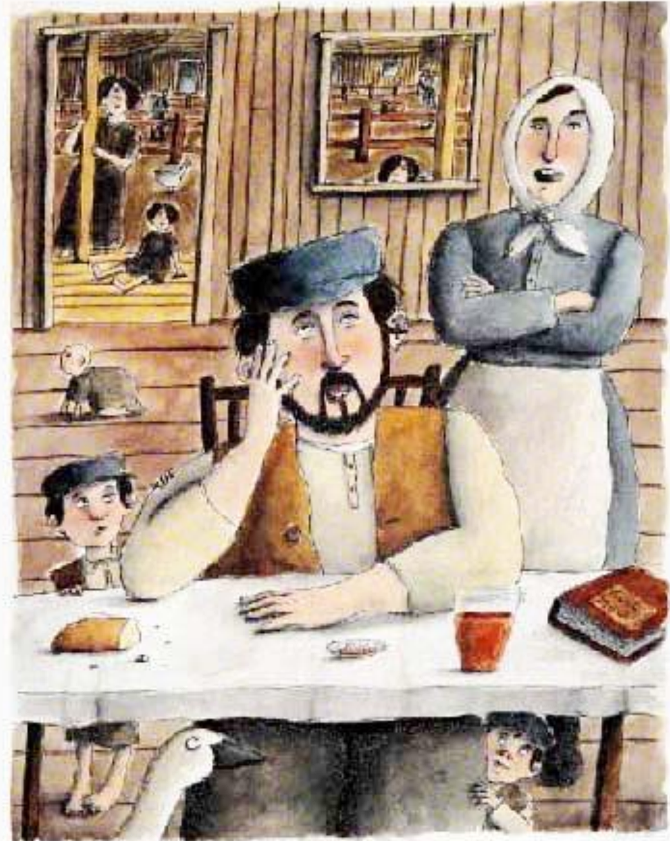
''मैं हमेशा से वॉरसॉ देखना चाहता रहा हूँ,'' मैन्डेल ने कहा।

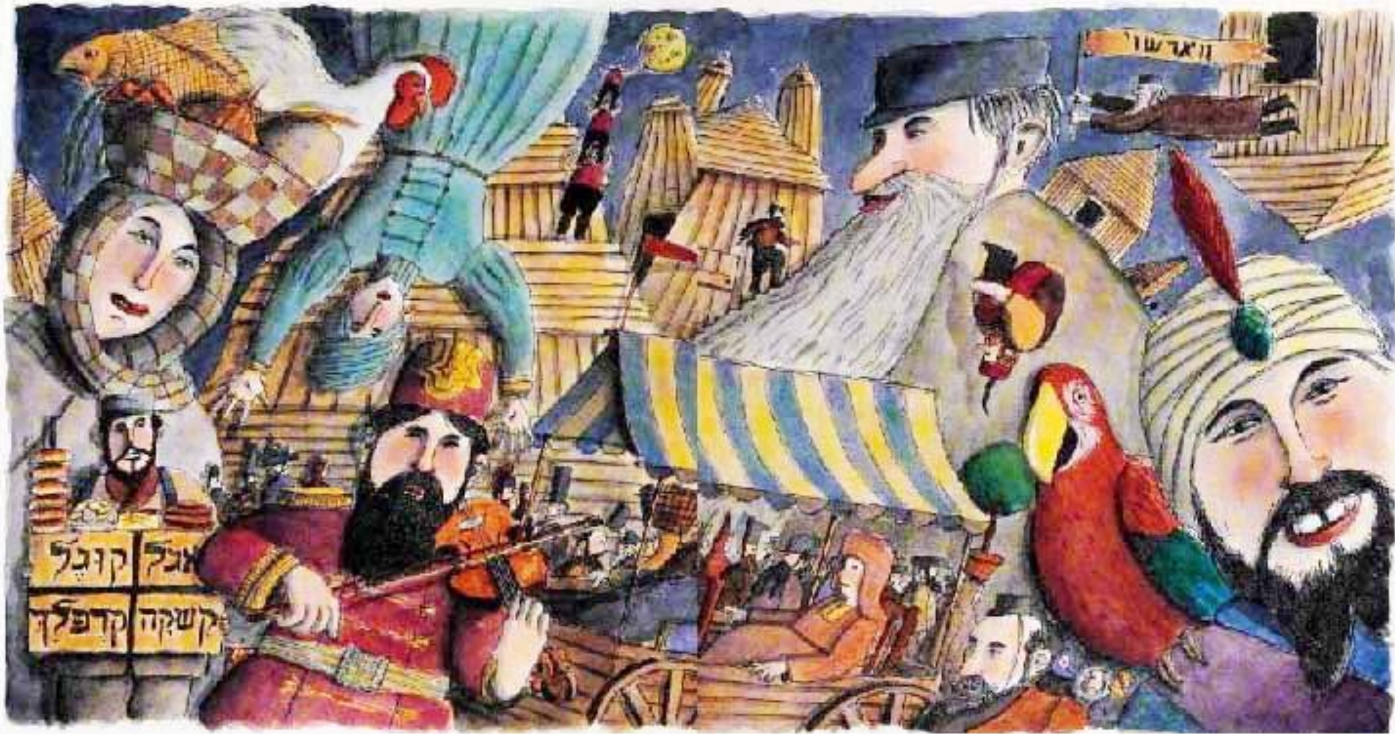
''और वॉरसॉ पहुँचोगे कैसे? पाखी की तरह उड़ कर?''

''ओह माल्के, माल्के! काश मैं उड़ पाता,'' मैन्डेल ने पीड़ा से भर कहा।

सच्चाई यह थी कि मैन्डेल और माल्के बेहद ग़रीब थे। वे बमुश्किल अपने बच्चों और कुछ बत्तखों का पेट भर पाते थे।

''मैं हमेशा के लिए यहीं फंसा रहूँगा,'' मैन्डेल ने भारी मन से सोचा।





उसी रात मैन्डेल ने एक सपना देखा। उसने सपने में देखा कि वह एक बड़े शहर में है। यह भी कि शहर की लम्बी-चौड़ी सड़कों पर जहाँ तक नज़र जा सकती थी, शानदार इमारतें हैं। सड़कों पर भड़कीली पोशाकें पहने लोग हैं। वहाँ सर्कस के जानवर, कलाबाज़, बिना घोड़ों वाली गाड़ियाँ हैं। और फेरी लगाने वाले दुनिया भर की हर किस्म की चीज़ें बेच रहे हैं।

''मैं कहाँ हूँ?'' अचरज से भर मैन्डेल ने पूछा।

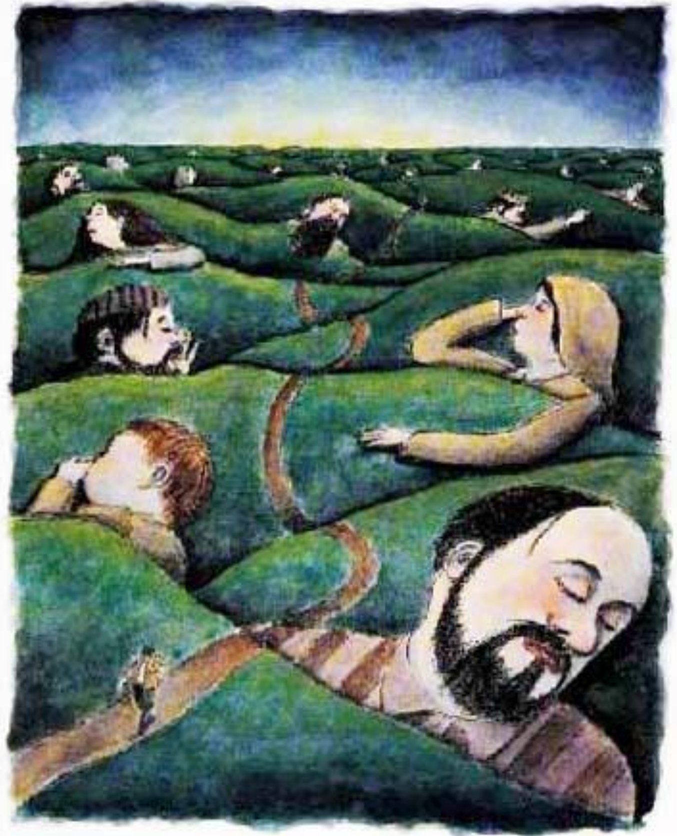
''तुम वॉरसॉ में हो मेरे दोस्त,'' एक राहगीर ने उसे बताया।

इसके बाद मैन्डेल जाग गया।

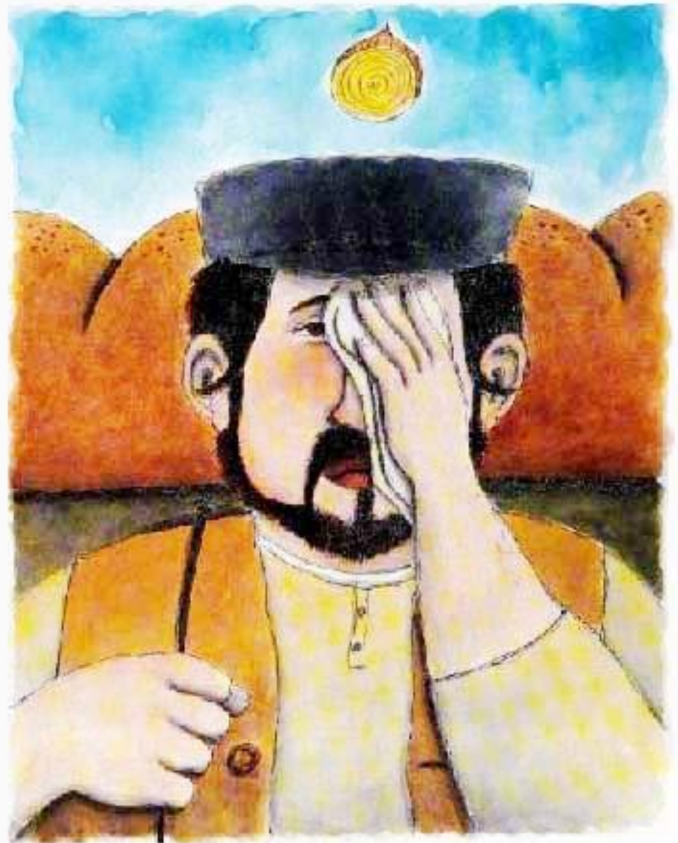
''बस बहुत हुआ,'' मैन्डेल ने तय किया। ''मुझे वॉरसॉ जाना ही होगा। अभी तुरन्त! इसी पल!''

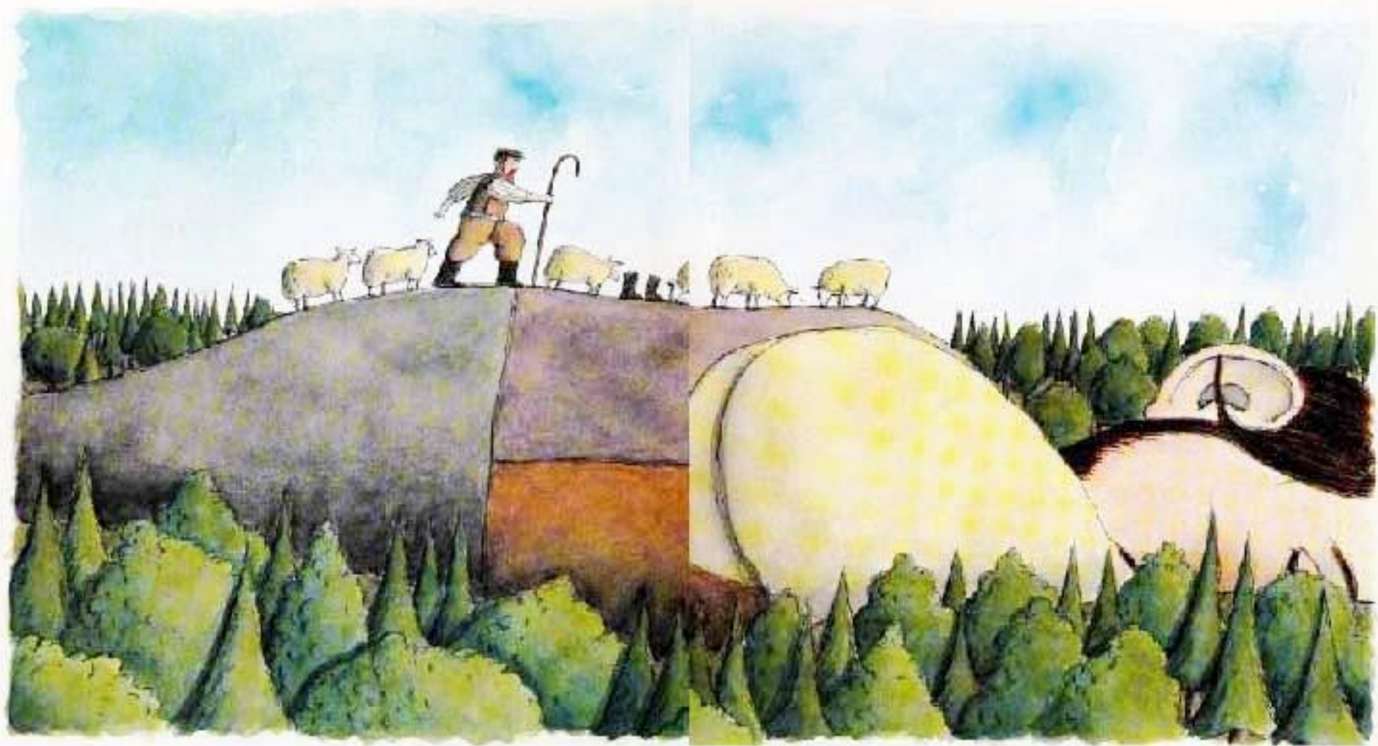
जिस वक़्त मैन्डेल गुपचुप तैयार हो, अपने झोले में डबलरोटी और प्याज़ रख, अपनी पानी की सुराही भर, घर से निकला, दिन पूरी तरह उगा ही नहीं था।

चैल्म के बाशिन्दे अपने परों से भरे बिछौनों में इधर से उधर लोटते करवटें बदल रहे थे, कि मैन्डेल ने वॉरसॉ की राह पर कदम बढ़ा दिए।



पहले-पहल उसे चलना अच्छा लगा। बल्की उसे मज़ा भी आया। सूरज की हल्की गरमी सुहानी थी और ठंडी बयार उसे अच्छी लग रही थी। उसके जूतों में बहुत ज़्यादा छेद भी नहीं थे। पर जैसे-जैसे दिन गुज़रा मैन्डेल थक चला। जब तक सूरज दोपहरी के आकाश में ऊंचा चढ़ आया, वह रुक कर खाना खाने को तैयार था।





उसने सड़क के किनारे एक छायादार जगह चुनी, वहाँ बैठ उसने अपना रूखा-सूखा खाना खाया। खाते ही उसके मन में झपकी लेने की ज़बरदस्त तलब उठी।

"पर अगर मैं सो गया," मैन्डेल ने सोचा, "तो मुझे जागने पर याद कैसे रहेगा कि मैं किस दिशा में बढ़ रहा था?" पर इस टेढ़ी समस्या का हल भी उसे अचानक सूझ गया।

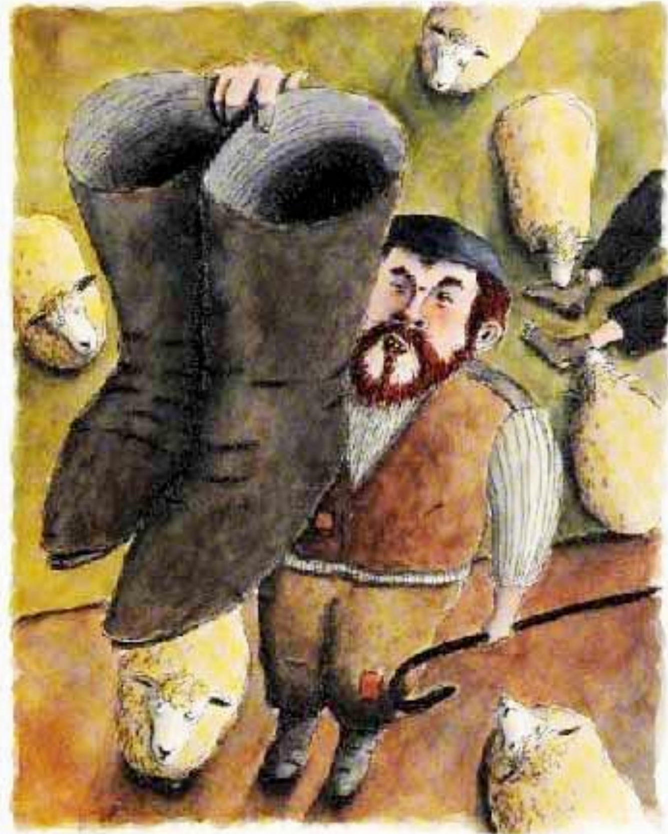
उसने अपने जूते उतारे और उन्हें सड़क के पास ऐसे रखा कि उनका मुँह वॉरसॉ की दिशा में हो।

"अब अगर मैं भूल भी जाऊँ, मेरे जूतों को तो याद रहेगा।" यों निश्चिन्त हो मैन्डेल संतोष की गहरी नींद में डूब गया।

मैन्डेल सो रहा था कि एक ग़रीब चरवाहा भेड़ों के अपने छोटे-से झुंड के साथ उसी रास्ते से गुज़रा। मैन्डेल के जूते देख उसने खुद से कहा, "मुझे एक नए जूतों की जोड़ी चाहिए। मेरे वाले बहुत पुराने हो चले हैं और उनमें तमाम छेद हैं। मैं इस सोते आदमी के जूतों से अपने जूते बदल लेता हूँ, किसीको क्या पता चलेगा?"

धूर्त चरवाहे ने मैन्डेल के जूते उठा उनका ध्यान से मुआयना किया। "अरे! इनमें तो मेरे जूतों से भी ज़्यादा छेद हैं," निराश चरवाहे ने सोचा। "धत्त तेरे की! और ये तो बदबू भी मार रहे हैं। रखो अपने जूते अपने पास जनाब!"

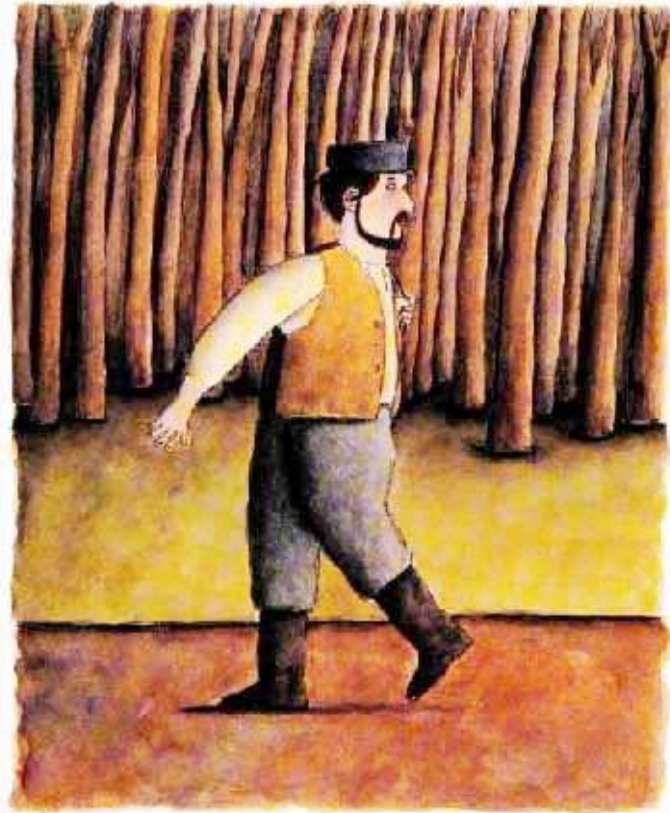
चरवाहे ने मैन्डेल के जूते ठीक उसी जगह रखे जहाँ से उठाए थे। पर अब उनका मुँह वॉरसॉ नहीं, चैल्म की ओर था।



मैन्डेल तरोताज़ा हो उठा। वह सफ़र जारी रखने को तैयार था। उसने उत्साह से अपने जूते पहने और एक पल भी यह देखे-सोचे बिना कि जूतों की दिशा बदल चुकी है, वह चैल्म के रास्ते बढ़ चला।

जब मैन्डेल कुछ आगे बढ़ा तो उसने एक अजीब बात पर ग़ौर किया, उसे लगा कि कुछ भी नया नहीं है। सब कुछ जाना-पहचाना सा लगा रहा है।

"यह भला कैसे हो सकता है?" उसने सोचा। "मैं तो इस रास्ते पहले कभी आया ही नहीं हूँ।"



सूरज ढ़ल रहा था कि वह एक छोटे-से गाँव के पास पहुँचा।

''क्या यह वॉरसॉ हो सकता है?'' उसने सोचा। ''यह तो यहाँ से बिलकुल चैल्म जैसा ही लग रहा है।''

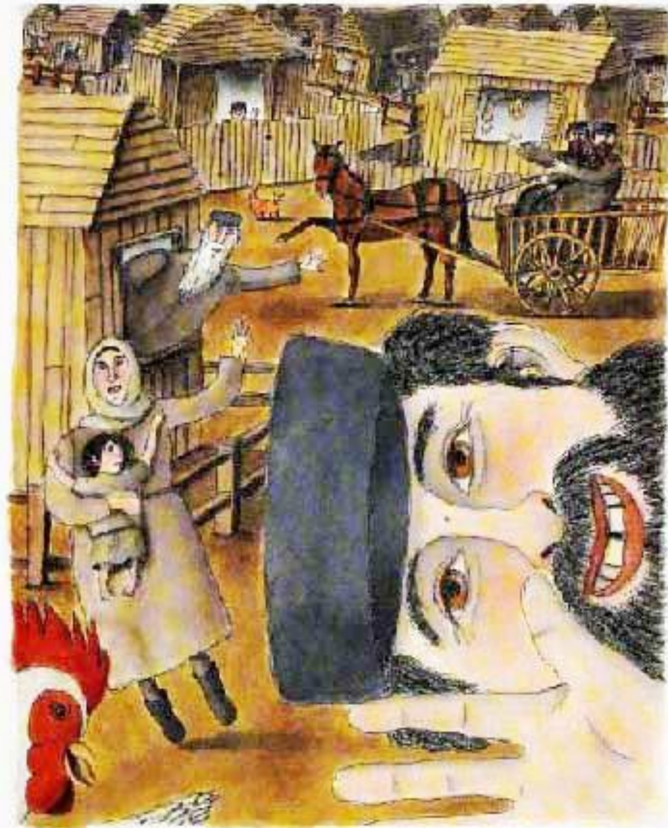
मैन्डेल गाँव में घुसा। वह जिस भी घर या इन्सान के पास से गुज़रा वह उसे पहचाना-सा लग रहा था।

सिर्फ़ इतना भर नहीं, हर इन्सान उसे भी पहचान रहा था।

''सलाम, रेब (श्रीमान) मैन्डेल,'' किसी ऐसे व्यक्ति ने कहा, जो हू-ब-हू चैल्म के कसाई पिंचास गारफिंकल जैसा लग रहा था।

''शुभ सांझ, रेब मैन्डेल,'' किसी ऐसी महिला ने कहा, जो मेयर की पत्नी सोनिया न्यूडलमान जैसी दिख रही थी।

मैन्डेल अचरज में डूबा बढ़ता चला जा रहा था, वह इतना चकरा गया था कि उसके मुँह से एक शब्द तक नहीं निकल सका था।

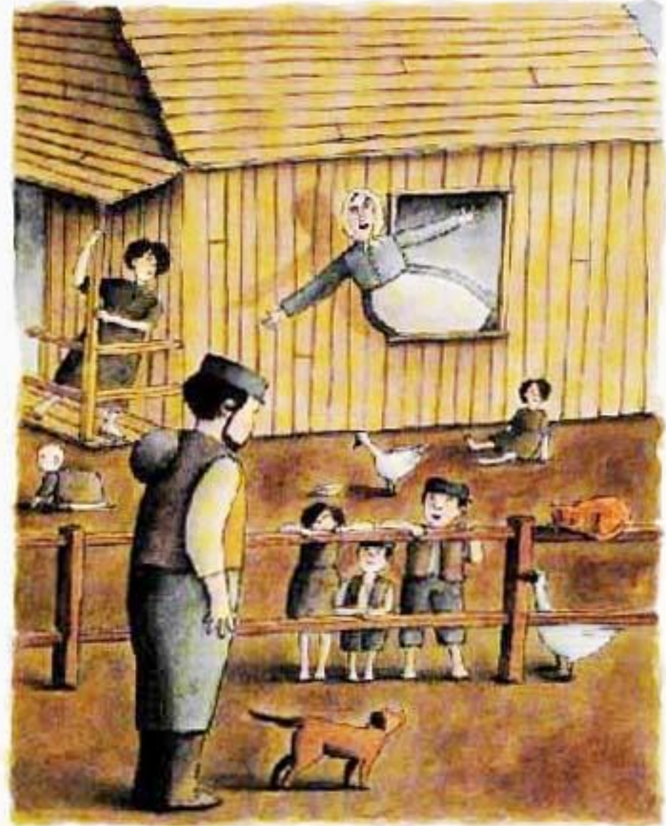


कुछ ही समय बाद उसने खुद को एक ऐसे घर के सामने पाया जो हम-ब-हू उसके अपने घर जैसा दिखाई दे रहा था। कुछ बच्चे उस घर के सामने खेल रहे थे, वे भी ठीक उसके बच्चों जैसे ही लग रहे थे।

''पापा, हमारे साथ खेलो!'' वे चीखे।

और तब एक बड़ी अजीब बात हुई। एक औरत ने, जो बिलकुल उसकी बीवी माल्के के प्रतिबिम्ब सरीखी लग रही थी, घर के खिड़की से झांक कर अपनी दमदार आवाज़ में कहा, ''मैन्डेल, कहाँ थे पूरे दिन? रात के खाने का समय हो आया! और देखो तो, क्या हाल बना रखा है अपना। अन्दर आओ और अपना हाथ-मुँह धो डालो। बच्चों तुम लोग भी चले आओ।''

मैन्डेल घर में ऐसे घुसा मानो वह एक सपने में घुस रहा हो।



“यह घर तो ठीक वैसा लग रहा है जैसा उस जगह का है, जहाँ से मैं आया हूँ,” वह चकित हो बोला।”

“मैन्डेल क्या बक रहे हो? जहाँ से आया हूँ से क्या मतलब है तुम्हारा,” माल्के ने झींक कर पूछा।

“अरे मैं एक लम्बा सफ़र तय कर आया हूँ। मैं दरअसल चैल्म का रहने वाला हूँ,” मैन्डेल ने कुछ फ़क्र के साथ कहा।

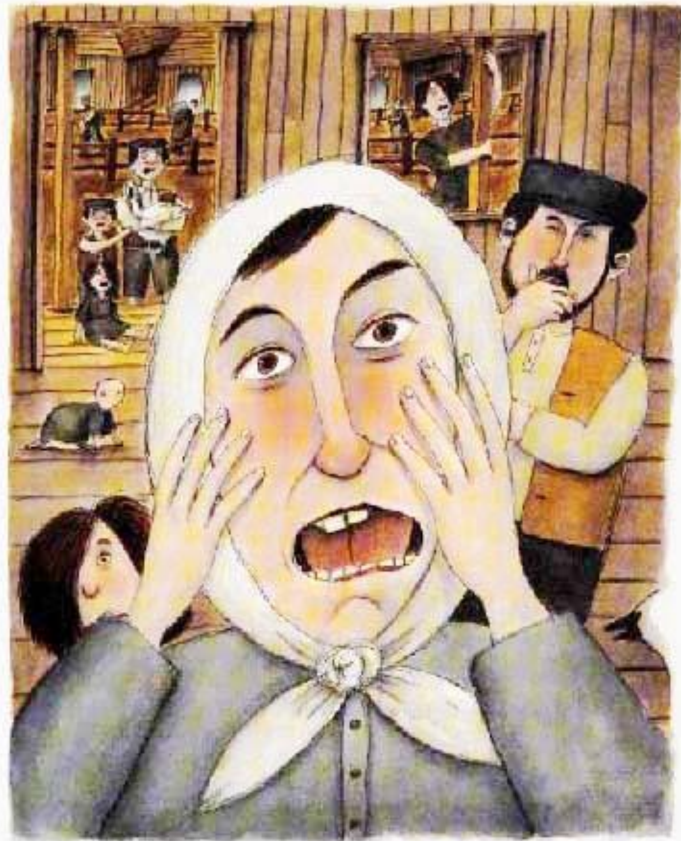
“ओह मैन्डेल! अरे मूरख, यह तुम्हारा ही घर है। तुम यहीं के हो!” माल्के ने सुबक कर कहा।

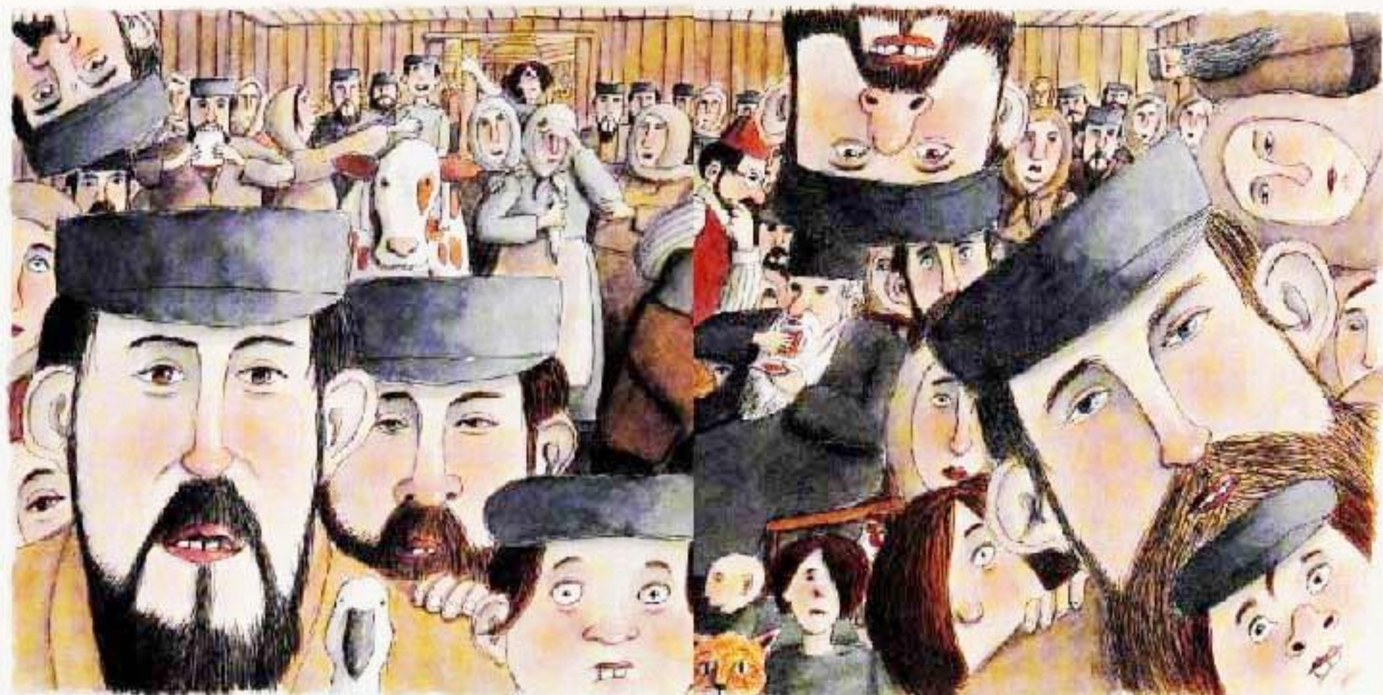
“आप मेरा नाम कैसे जानती हैं, मोहतरमा?” मैन्डेल ने चकरा कर पूछा।

“नाम कैसे जानती हूँ? बेवकूफ़ कहीं के। मैं तुम्हारी बीवी हूँ। हमारी शादी को सोलह साल हो चुके हैं। याद नहीं है क्या?”

“बड़ी अजीब बात है,” मैन्डेल बोला, “वहाँ मेरे घर में मेरी बीवी का नाम भी माल्के है। दरअसल तुम्हारी शक्ल भी उसके ही जैसी है। जुड़वाँ बहनें लगती हो तुम दोनों।”

“आह! इसका तो भेजा ही फिर गया है,” माल्के चीखी। “अरे कोई मदद करो! कोई डॉक्टर को बुलाओ! रब्बी को बुलाओ! अरे कोई किसीको तो बुलाओ, जल्दी से!”





मिनटों में पूरा का पूरा चैल्म गाँव ही उस छोटे से घर में आ जमा हुआ।

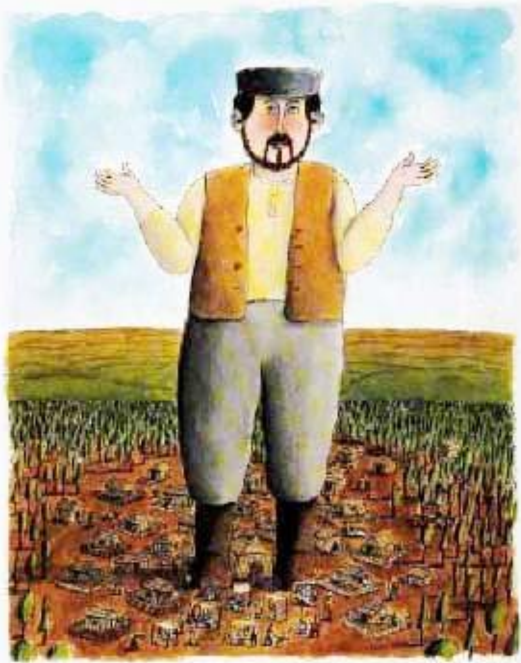
“मैंने तो पहले ऐसा कुछ देखा ही नहीं है,” पूरी कहानी सुन डॉक्टर बड़बड़ाया।

“मामला बड़ा पेचीदा है,” रब्बी ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते और सोचते हुए कहा।

कुछ समय बाद, जो सबको घंटों से लगे, रब्बी ने अपना गला खंखार कर साफ़ किया और बोला, “मुझे एक बात बताओ मैन्डेल अगर तुम यहाँ हो, तो फिर यहाँ रहने वाला मैन्डेल भला कहाँ है?”

“लगता है वह मेरे गाँव में होगा,” मैन्डेल ने सोच कर जवाब दिया।

“तो ऐसे में,” ज़हीन रब्बी ने बात जारी रखते हुए कहा, “तुम्हें तब तक यहीं रहना चाहिए जब तक वह दूसरा मैन्डेल लौट नहीं आता। जब वह अपने घर लौट आए, तुम भी अपने घर लौट जाना।”



सो मैन्डेल सालों-साल उस दूसरे मैन्डेल के घर लौटने का इन्तज़ार करता रहा। पर अजीब यह था कि वह दूसरा मैन्डेल कभी लौटा ही नहीं।

कभी-कभार मैन्डेल फिर से एक और सफ़र पर निकलने की बात सोचता है। पर हमेशा नहीं जाने का फैसला कर लेता है।

''तुक ही क्या है,'' वह माल्के से कहता है। ''अगर एक जगह ठीक दूसरी जगह जैसी ही है, तो बेहतर यही है ना कि मैं जहाँ हूँ, वहीं डटा रहूँ।''